महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

सांस्कृतिक रंग में रंगा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

वर्धा दि. 29 अक्टूबर 2012 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय पिछले दिनों पूरी तरह से सांस्कृतिक रंग में रंगा नजर आया। मौका था छात्रों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या का। कार्यक्रम की शुरूआत कुलसचिव कैलाश खामरे के हाथों गांधी के चित्र पर मल्यार्पण के साथ हुई। उनके साथ वित्ताधिकारी संजय गवई व सामाजिक एवं मानविकी विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय ‘अंकित’ मौजूद रहे।

मंच पर भारतीय और वैश्विक सामासिक संस्कृति एक साथ दिखी, जो गांधी के वैश्विक व्यक्तित्व और विचारधारा को व्याख्यायित कर रही थी। विश्वविद्यालय की छात्राओं ने अलग-अलग राज्यों के लोकनृत्य प्रस्तुत कर सभी को झूमने पर मजबूर किया। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विदेशी छात्रा अरिसिया ने बैले, कत्थक, पाश्चात्य और क्लासिकल भारतीय नृत्य की प्रस्तुति कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। अरिसिया ने अपनी प्रस्तुति के दौरान हिंदी गीत ‘देश रंगीला’ और ‘आ-जा नचले’ पर नृत्य कर सभी को खूब नचाया।

चीनी छात्र मंगल ने अपने डांस स्टंट से सभी को आकर्षित किया। कार्यक्रम में सनी और उनकी टीम की बैण्ड प्रस्तुति पर लोग खूब थिरके। कार्यक्रम में समस्त अध्यापक, कर्मचारी, विद्यार्थी और उनके परिवार के लोग उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय में पहली बार इस तरह के कार्यक्रम आयोजित होने के कारण सभी छात्र-छात्राओं में गजब का उत्साह देखा गया।

सांस्कृतिक संध्या के दौरान लोक-संगीत की भी प्रस्तुतियाँ हुई। सहायक प्रोफेसर धनजी प्रसाद ने भोजपुरी गीत से ऐसा समां बांधा कि एक के बाद एक छात्रों द्वारा प्रस्तुत क्षेत्रीय गीतों की मोहक प्रस्तुति ने सबको छू लिया।

विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने पुराने-नए फिल्मी एकल और युगल गीत जैसे- 'पल भर के कोई हमें प्यार कर ले', 'वादा तेरा वादा', 'जाने कहां गए वो दिन', 'आ जा सनम मधुर चांदनी में', कवने दिशा में लेके चला रे बटोहिया, बीते हुए लम्हो की कसक इत्यादि की प्रस्तुति से वहां बैठे सभी युवाओं को झूमया तो अध्यापक अपने दौर के फिल्मी गीतों के रंग मे पूरी तरह रंगे नजर आए। इस दौरान भाषा विद्यापीठ के छात्रों ने लघु नाट्य की प्रस्तुति की तो मीडिया विभाग के छात्र ने लालू यादव की मिमक्री से लोगों को खूब गुदगुदाया। इसके अलावा काव्य पाठ, एकल अभिनय, सटायर इत्यादि की प्रस्तुति से कार्यक्रम में विविधता नज़र आई। कार्यक्रम के संचालन की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय के नवागंतुक छात्र-छात्राओं ने अदा की। कार्यक्रम की सरहाना करते हुए कुलसचिव कैलाश खामरे ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से छात्रों के उत्साह में वृद्धि होती है। ऐसे कार्यक्रम लगातार आयोजित होने चाहिए ताकि छात्रों को अपनी प्रतिभा उभारने का एक मंच मिले और उनकी नीरसता समाप्त हो सके। अध्यापकों ने छात्रों की पहल को सराहनीय बताते हुए यह कहा कि इस कार्यक्रम से विश्वविद्यालय में एक नयी सांस्कृतिक परंपरा की शुरुआत हुई है। इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन से छात्रों में एक नयी ऊर्जा का संचार होता है।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी